

## Padma Shri



### PROF. USHA YADAV

Prof. Usha Yadav has the honour of attaining glorious heights in the fields of education and literature. Over the past more than five decades, she has written about 100 books in Hindi in genres like poetry, stories, novels, dramas, biographies and book-reviews, for children as well as grown-ups. Her selected works are included in the textbooks, under the syllabi of government schools, in the states of Delhi, Madhya Pradesh, Maharashtra, Rajasthan, and Uttar Pradesh.

2. Born on 2<sup>nd</sup> April, 1946 at Kanpur City of Uttar Pradesh, Prof. Usha Yadav completed her graduation in 1962 from Agra University. She obtained her Ph.D. in 1973 from Kanpur University and achieved the highest academic qualification of D.Litt. in 1996 from Agra University. From 1978 to 2008, she served the education sector, teaching at Kanhaiyalal Maniklal Munshi Institute, Agra University and Kendriya Hindi Sansthan, Agra. During this period, she guided the research of 18 students for their Ph.D. and 30 students for their M.Phil. Ten researchers have obtained their Ph.D. on her literary works of Prof. Usha Yadav herself. Her dozens of research papers in various research journals have provided momentum to the developmental journey of Hindi language.

3. Prof. Usha Yadav's Picturisation, figurativeness, imagery, as well as readability are some of the important traits of her literary works. Her literature has an important role in preserving the 5000-years old Indian cultural heritage and perennial human values. Through her literature, she has worked towards curbing superstitions and dogmas prevalent in the society, and has strongly addressed issues like female foeticide, dowry, gender discrimination, honour killings, communal harmony, women's education and empowerment, conservation of natural resources etc. Children's issues, women's issues, old-age related issues, and the spirit of nationalism are especially identifiable with her literature.

4. Prof. Usha Yadav's works have been regularly published in top magazines/periodicals of Hindi language. Her works have been widely broadcast through various All India Radio Centres. Translations of many of her works, in various Indian languages, namely Telugu, Assamese, Odia, Punjabi, Marathi etc. as well as English, have earned tremendous popularity. She also provided guidance to several upcoming writers by taking part in the educational workshop conducted at Siliguri in 1998, organised by the Central Hindi Directorate. She has enhanced the pride of Hindi language and literature by taking part in numerous workshops organised by several universities, and by presenting papers at national conferences/seminars.

5. Prof. Usha Yadav is the recipient of numerous awards and honours. Her novel "Kaahe Ri Nalini", based on the global problem of sexual exploitation of minor girls, has been honoured with the Akhil Bharatiya Veer Singh Dev Award for 2008, by the Madhya Pradesh Sahitya Academy, Bhopal. She was conferred with the highest award for children's literature, namely Baal Sahitya Bharati, in 1998, as well as the Vishwavidyalaya Stareeya Lekhan Samman in 2004 by Uttar Pradesh Hindi Sansthan. Her children's novel "Qile Ka Rahasya" (manuscript) was honoured in 2003 with the Bharatendu Harishchandra Award (First Prize) by the Ministry of Information and Broadcasting, Government of India. Her novel "Uske Hisse Ki Dhoop" (manuscript), on the subject of child-rights, was awarded the First Prize in 2018 by National Human Rights Commission under the Mahatma Gandhi Biennial Hindi Writing Award Scheme. Through her novel "Kitne Dhoomketu", on the subject of the COVID-19 Pandemic, she has drawn attention to being connected with the times.



## प्रो. उषा यादव

प्रो. उषा यादव को शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में गौरवशाली शिखर पर पहुंचने का सम्मान प्राप्त है। पिछले पांच दशक से भी अधिक समय में उन्होंने बच्चों और बड़ों के लिए कविता, कहानियां, उपन्यास, नाटक, आत्मकथाएं और पुस्तक-समीक्षा जैसी विधाओं में हिंदी की लगभग 100 पुस्तकें लिखी हैं। उनकी चुनिंदा रचनाओं को दिल्ली, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्यों के सरकारी स्कूलों के पाठ्यपुस्तकों में शामिल किया गया है।

2. 02 अप्रैल, 1946 को उत्तर प्रदेश के कानपुर शहर में जन्मी प्रो. उषा यादव ने 1962 में आगरा विश्वविद्यालय से स्नातक की पढ़ाई पूरी की। उन्होंने कानपुर विश्वविद्यालय से 1973 में पीएच.डी की उपाधि प्राप्त की और आगरा विश्वविद्यालय से 1996 में डी. लिट की सर्वोच्च शैक्षिक योग्यता हासिल की। 1978 से 2008 तक उन्होंने कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी इंस्टीट्यूट, आगरा विश्वविद्यालय और केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा में अध्यापन करते हुए शिक्षा क्षेत्र में कार्य किया। इस अवधि के दौरान उन्होंने पी.एच.डी. के लिए 18 छात्रों और एम.फिल. के 30 छात्रों के शोध का मार्गदर्शन किया। दस शोधकर्ताओं ने उनकी साहित्यिक कृतियों पर पीएचडी की है। विभिन्न शोध पत्रिकाओं में प्रकाशित उनके दर्जनों शोध पत्रों ने हिंदी भाषा की विकास यात्रा को गति प्रदान की है।

3. चित्रात्मकता, व्यंजनात्मकता, कल्पनाशीलता और बोधगम्यता प्रो. उषा यादव साहित्यिक कृतियों के कुछ विशिष्ट गुण हैं। 5000 साल पुरानी भारतीय सांस्कृतिक विरासत और शाश्वत मानवीय मूल्यों के संरक्षण में उनके साहित्य की अहम भूमिका है। अपने साहित्य के माध्यम से उन्होंने समाज में व्याप्त अंधविश्वास और रूढ़ियों को दूर करने का काम किया है और कन्या भ्रूण हत्या, दहेज, लैंगिक भेदभाव, ऑनर किलिंग, सांप्रदायिक सद्भाव, महिला शिक्षा और सशक्तीकरण, प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण आदि मुद्दों को पुरजोर तरीके से उठाया है। बच्चों के मुद्दे, महिलाओं के मुद्दे, बुढ़ापे से जुड़े मुद्दे और राष्ट्रवाद की भावना उनके साहित्य की खास पहचान है।

4. प्रो. उषा यादव की रचनाओं को नियमित रूप से हिंदी भाषा की शीर्ष पत्रिकाओं में प्रकाशित किया गया है। विभिन्न आकाशवाणी केंद्रों के माध्यम से उनकी रचनाओं का व्यापक प्रसारण किया गया है। तेलुगु, असमिया, ओडिया, पंजाबी, मराठी आदि जैसी विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी में उनकी कई अनुदित कृतियों ने जबरदस्त लोकप्रियता अर्जित की है। उन्होंने केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा 1998 में सिलीगुड़ी में आयोजित शैक्षिक कार्यशाला में भाग लेकर कई उदीयमान लेखकों का भी मार्गदर्शन किया। उन्होंने अनेक विश्वविद्यालयों द्वारा आयोजित कार्यशालाओं में भाग लेकर और राष्ट्रीय सम्मेलनों/सेमिनारों में पेपर प्रस्तुत करके हिंदी भाषा और साहित्य का मान बढ़ाया है।

5. प्रो. उषा यादव को अनेक पुरस्कार और सम्मान प्रदान किए गए हैं। नाबालिग लड़कियों के यौन शोषण की विश्व समस्या पर आधारित उनके उपन्यास "काहे री नलिनी" को मध्यप्रदेश साहित्य अकादमी, भोपाल द्वारा 2008 के अखिल भारतीय वीर सिंह देव पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। उन्हें, 1998 में बाल साहित्य के सर्वोच्च पुरस्कार बाल साहित्य भारती के साथ-साथ उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 2004 में विश्वविद्यालय स्तरीय लेखन सम्मान प्रदान किया गया था। उनके बाल उपन्यास "किले का रहस्य" (पांडुलिपि) को 2003 में के सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा भारतेन्दु हरिश्चंद्र पुरस्कार (प्रथम पुरस्कार) से सम्मानित किया गया था। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा 2018 में बाल अधिकार विषय पर उनके उपन्यास "उसके हिस्से की धूप" (पांडुलिपि) को महात्मा गांधी द्विवार्षिक हिंदी लेखन पुरस्कार योजना के तहत प्रथम पुरस्कार दिया गया था। कोविड-19 महामारी पर उनके उपन्यास "कितने धूमकेतु" के माध्यम से, उन्होंने सामयिक विषय की ओर ध्यान आकर्षित किया है।